कक्षा 10+2 तैयारकर्ता व प्रस्तुतकर्ता

'मधुआ' डॉ.सुनील बहल

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

क) लगभग 60 शब्दों में उत्तर दें :-

1.) 'मधुआ' कहानी में लेखक ने एक बालक द्वारा शराबी के हृदय परिवर्तन का सुन्दर चित्रांकन किया है। स्पष्ट करें।

उत्तर- इस कहानी के मुख्य पात्र शराबी को शराब पीने की इतनी बुरी लत है कि उसने सान धरने का अपना धंधा भी छोड़ दिया। वह ठाकुर सरदार सिंह को अपनी लच्छेदार कहानियाँ सुनाकर उनसे मिलने वाले पैसों से शराब पीता था। किन्तु एक दिन शराबी की मुलाकात एक छोटे से लड़के मधुआ से होती है, जो कि ठाकुर साहब के जमादार की डाँट-डपट व कुँवर साहब की मार खाकर सिसकियाँ ले रहा था। वह भूख से निढाल भी था। उसे देखकर शराबी के मन में सहानुभूति व ममता जाग पड़ी। उसने बच्चे को अपनी ज़िम्मेदारी समझ लिया ली और शराब पीना छोड़कर फिर से सान धरने का काम करना शुरू कर दिया। सचमुच, लेखक ने शराबी के हृदय परिवर्तन का सुंदर चित्रांकन किया है।

2.'मधुआ' कहानी का नामकरण कहाँ तक सार्थक है?

उत्तर- यद्यपि कहानी का मुख्य पात्र शराबी ही है किन्तु लेखक ने फिर भी कहानी का नाम एक बाल 'मधुआ' के नाम पर रखा है। मधुआ ही कहानी का वह पात्र है जिसके आने से न सिर्फ शराबी के हृदय में परिवर्तन दिखाई देता है बल्कि कहानी में भी एक नया मोड़ आता है तथा कहानी का उद्देश्य भी सामने आता है। अत: कहानी का नामकरण अत्यंत सार्थक तथा सोद्देश्य है। सरलता, संक्षिप्ता एवं जिज्ञासा शीर्षक की विशेषताएं हैं।

3.'मधुआ' कहानी द्वारा लेखक ने मद्यपान के कुप्रभावों को सामने रखते हुए दायित्व और स्नेह द्वारा इस समस्या का अनूठा समाधान प्रस्तुत किया है ।

आपके इस विषय में क्या विचार हैं?

उत्तर-लेखक ने स्पष्ट किया है कि यह मद्यपान का कुप्रभाव ही तो है कि शराबी शराब की बुरी लत के कारण दोपहर तक सोया रहता है और उसने अपने सान धरने के धंधे को भी छोड़ दिया। किन्तु लेखक ने दायित्व और स्नेह द्वारा इस समस्या का अनूठा उपाय भी ढूँढ़ा है। शराबी पर जब 'मधुआ' की ज़िम्मेदारी आ जाती है और वह उससे स्नेह करता है तो वह शराब पीना छोड़कर फिर से अपने काम धंधे में लग जाता है। उसके जीवन को एक नयी दिशा मिलती है।

ख) लगभग 150 शब्दों में उत्तर दें:-

प्रश्न1 'मधुआ' कहानी के आधार पर 'मधुआ' का चरित्र चित्रण कीजिए।

इस कहानी में मधुआ एक गरीब एवं अनाथ बालक है जो कि कुँवर सिंह के घर लखनऊ में नौकरी करता है। उसकी चारित्रिक विशेषताएं निम्नलिखित हैं -

1.मेहनती : 'मधुआ' मेहनती लड़का है। वह कुँवर साहब का ओवर कोट उठाए दिन भर खेल में उनके साथ रहता था। शाम को फिर वह कुछ देर उनकी हवेली में भी काम करता था।

CONFIDENTIAL

2. अधिकारों के प्रति सचेत: किन्तु जब 'मधुआ' बालक एक दिन सारा दिन कुँवर साहब का कोट उठाए खेल में उनके साथ घूमता रहा। न तो कुँवर साहब को और न ही उनके नौकर को ख्याल आया कि 'मधुआ' सुबह से भूखा है। किन्तु मधुआ अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। उसने कुँवर साहब के नौकर से सारा दिन भूखा रहने की शिकायत की तो उसे नौकर से डाट पड़ी तथा कुँवर साहब की लात भी खानी पड़ी, जिसके कारण वह रोता रहा जिसमें उसकी हालत साफ स्पष्ट होती है।

प्यार का भूखा : मधुआ को कुँवर साहब सिंह पीटते हैं और उनका नौकर भी उसे डांटता रहता है, जिसके कारण कोमल हृदय बालक रोने लग जाता है किन्तु शराबी की सहानुभूति और प्यार पाकर वह बहुत खुश होता है जिससे पता चलता है कि वह सिर्फ प्यार का ही भूखा है।

दृढ़ निश्चयी : मधुआ बालक दृढ़ निश्चय वाला है। कुँवर साहब की रोज़-रोज़

मार खाकर वह दुःखी हो जाता है। जब शराबी का प्यार उसे मिलता है तो वह दृढ़ निश्चय कर लेता है कि वह अब कभी कुँवर साहब के घर नौकरी नहीं करेगा। वह शराबी के साथ रहना पंसद करता है।

'मधुआ' कहानी के आधार पर 'शराबी' का चरित्र चित्रण करें।

उत्तर-शराबी 'मधुआ' कहानी का प्रमुख पात्र है। सारी कहानी उसके इर्द-गिर्द घूमती है। उसकी चारित्रिक विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

शराबी : लेखक ने इस कहानी में शराबी को कोई नाम नहीं दिया। सारी कहानी में उसे शराबी ही कहा गया। अत: उसके चरित्र की पहली विशेषता यही है कि उसे शराब पीने की बुरी आदत है। अपना सब कुछ भुलाकर उसने शराब को ही अपना जीवन बनाया हुआ है।

आलसी तथा कामचोर : शराबी एक आलसी तथा कामचोर के रूप में कहानी में दर्शाया गया है। शराब की लत के कारण वह दोपहर 12 बजे तक सोया रहता है। वह इसी बुरी लत के कारण कामचोर बन गया। इसीलिए उसने अपना काम करने का धंधा भी बंद कर दिया।

भुलक्कड़ : वह भुलक्कड़ भी है। उसके पास सान धरने की मशीन भी थी। वही मशीन उसकी रोज़ी रोटी थी। उस मशीन को उसने अपने मित्र राम के पास रख छोड़ा था किन्तु वह भूल चुका था उसकी मशीन उसके मित्र के पास पड़ी है।

4. किक्सेबाज़ : शराबी पेट पालने के लिए ठाकुर साहब को किस्से कहानियाँ सुनाता है। ठाकुर साहब को कहानियाँ सुनने का शौक था। शराबी उन्हें रईसजादों की भिन्न-भिन्न कहानियाँ सुनाकर उनका मनोरंजन करता जिसके बदले में ठाकुर साहब उसे पैसे देते और वह उन पैसों से शराब पीता था।

5. कोमल हृदय : शराबी को शराब की बुरी लत है किन्तु वह कोमल हृदय वाला व्यक्ति है। किसी का दुःख उससे नहीं देखा जाता। मधुआ को रोता हुआ देखकर उसका दिल पिघल जाता है। कहानी सुनाकर मिले हुए एक रुपये से वह शराब न खरीदकर बालक के लिए पूरियाँ, मिठाई खरीद कर लाता है। अत: उसका हृदय

कोमल है।

डॉ.सुनील बहल

6. कर्त्तव्यनिष्ठ एवं त्यागी : कहानी के अंतिम चरण में शराबी के चरित्र में एकाएक परिवर्तन होता है।पहले वह शराब की बुरी लत के कारण गैर ज़िम्मेदार व्यक्ति था किन्तु मधुआ की ज़िम्मेदारी जब उस पर पड़ती है तो वह फिर से घरबारी बनने को तैयार हो जाता है और इसी कारण शराब पीना भी छोड़ देता है।

7. बढ़िया कारीगर : पहले तो उसने शराब की लत के कारण अपने सान धरने के धंधे को छोड़ दिया किन्तु जब मधुआ की ज़िम्मेदारी के कारण वह घरबारी बनने को तैयार हो जाता है तो उसे अपनी कारीगरी पर पूर्ण विश्वास है अतः वह फिर से सान धरने के काम को शुरू कर देता है।

प्र.6 'मधुआ' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करें।

उत्तर 'मधुआ' कहानी एक उद्देश्य प्रधान कहानी है। यह प्रसाद जी की श्रेष्ठ एवं सरल कहानियों में से एक है। इसका उद्देश्य पूर्णतः स्पष्ट है। लेखक इस कहानी के माध्यम से यह कहना चाहता है कि बुरे व्यक्ति में भी ममता, सहानुभूति, परोपकार आदि गुण विद्यमान होते हैं, किन्तु वे छिपे रहते हैं। उचित व अनुकूल वातावरण पाकर वे जागृत हो जाते हैं। कहानी का मुख्य पात्र शराबी है जो शराब को ही जीवन मानता है। वह एकदम आलसी व निकम्मा है। यहाँ तक कि उसने अपने सान धरने के धंधे को भी छोड़ रखा है। किन्तु कुँवर साहब द्वारा मधुआ को प्रताड़ित करने पर मधुआ को रोता हुआ देखकर उससे रहा नहीं जाता। वह उसे बड़े प्यार से अपने साथ ले जाता है। बालक को भूखा देख उसके लिए पूरियाँ और मिठाई भी लाता है। इसके अतिरिक्त वह मुधआ की खातिर फिर से घरबारी बन जाता है और अपने पुराने सान धरने के धंधे को फिर से शुरू कर देता है। इस प्रकार शराबी को निकम्मे से कर्मठ, गैरज़िम्मेदार से ज़िम्मेदार, आलसी से कर्तव्यनिष्ठ, निष्क्रिय से सक्रिय, शराबी से त्यागी दिखाना ही कहानी का उद्देश्य है और लेखक इसमें पूरी तरह से सफल हुआ है, निस्संदेह यह एक प्रेरणादायक कहानी है।

डॉ.सुनील बहल

प्र.7 'मधुआ' कहानी के माध्यम से प्रसाद जी ने समाज की कई समस्याओं का समाधान किया है- आपके विचार में वे समस्याएं क्या हैं और लेखक ने उन्हें कैसे हल किया है?

'मधुआ' कहानी में लेखक ने मुख्य रूप से दो समस्याओं को पाठकों के सामने रखा है और उनके समाधान भी कहानी के भीतर दिये हैं। उनका वर्णन इस प्रकार है-

1. पहली समस्या : लेखक ने इस कहानी में मुख्य रूप से मद्यपान की समस्या को उजागर किया है। शराब की बुरी लत के कारण मनुष्य आलसी, निकम्मा बन जाता है और अपने कर्त्तव्य से विमुख भी हो जाता है। लेखक ने शराबी के माध्यम से यह बात सहज ही उद्घाटित की है। शराबी ने शराब की खातिर अपने सान धरने के धंधे को छोड़ दिया और आलसी व निकम्मा बनकर जीवन व्यतीत करने लग गया।

लेखक द्वारा प्रस्तुत समाधान : लेखक ने बालक मधुआ के प्रति शराबी के हृदय में ममता, दया, सहानुभूति, प्रेम तथा ज़िम्मेदारी आदि मानवीय गुणों को जागृत कर उसे शराब छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। अत: लेखक ने स्पष्ट किया है कि परिस्थितियों के बदलने से मनुष्य में बदलाव संभव है।

2. दूसरी समस्या : लेखक ने दूसरी समस्या उठायी है- अमीरों द्वारा भोले-भाले नौकरों पर अत्याचार करने की समस्या। मधुआ कुँवर साहब के यहाँ खेल के समय उनका ओवरकोट उठाने का काम करता है। सारा दिन वह उनका ओवर कोट उठाए फिरता है। न तो कुँवर साहब को और न उनके नौकर को यह ध्यान आता है कि मधुआ सुबह से भूखा है। किन्तु जब स्वयं मधुआ अपने भोजन के बारे में उनसे बात करता है तो उसे नौकर से डांट व कुँवर साहब से मार खानी पड़ती है। इस तरह का अमानवीय अत्याचार उस पर होता है।

लेखक द्वारा प्रस्तुत समाधान : लेखक ने मधुआ के माध्यम से समाधान दिया है कि ऐसे अत्याचारी और गैरज़िम्मेदार व्यक्ति के यहाँ नौकरी नहीं करनी

चाहिए बल्कि अपना ही कोई छोटा मोटा धंधा कर लेना चाहिए। मधुआ ने भी कुँवर साहब के यहाँ काम करना छोड़ शराबी के साथ सान धरने का काम करना ही मुनासिब समझा।

ग) सप्रसंग व्याख्या करें -

1. मौज बहार की एक घड़ी, एक लम्बे दुःख पूर्ण जीवन से अच्छी है। उसकी खुमारी में रूखे दिन काट लिए जा सकते हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित मधुआ कहानी में से लिया गया है। ठाकुर साहब शराबी से कहते हैं कि बड़ी अजीब बात है कि तुमने सात दिन चने-चबाने पर बिताये हैं और आज तुम भोजन न करके शराब की सोच रहे हो तो शराबी अपनी इच्छा बताता हुआ ये शब्द कहता है।

व्याख्या : शराबी का जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण है। वह मौज मस्ती के एक पल को भी लम्बे दुःखपूर्ण जीवन से अच्छा मानता है। वह कहता है कि शराब की खुमारी में अर्थात नशे में अभावग्रस्त दिन भी आसानी से काटे जा सकते हैं। शराबी के लिए शराब ही उसका जीवन है।

भावार्थ : भाव यह है कि शराब के नशे में वह अपने दुःख भुलाना चाहता है। अत: वह शराब पीने के एक क्षण को भी महत्वपूर्ण मानता है।

विशेषः क.) शराबी वर्तमान के आनन्द को तो देख रहा है किन्तु शराब के नुकसान से वह अपरिचित है।

ख.) भाषा, सरल सहज एवं स्वाभाविक है।

2. सोचा था, आज सात दिन और भर पेट पीकर सोऊँगा, लेकि वह छोटा सा रोना, पाजी न जाने कहाँ से आ धमका।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'मधुआ' कहानी में से लिया गया है। शराबी मधुआ को भूखा देखकर उसके लिए पूरियाँ और मिठाई लाता है। मधुआ शराबी का पुराना कोट ओढ़कर सो जाता है और शराबी को जब नींद आने लगी तो उस समय वह ये पंक्तियां अपने आप से बड़बड़ाते हुए कहता है।

डॉ.सुनील बहल

व्याख्या : शराबी ने सात दिन से शराब नहीं पी थी। जब उसे ठाकुर साहब से कहानी सुनाने के बदले में एक रुपया मिला था तो उसने सोचा था कि आज वह भरपेट शराब पीकर आनन्द से सोयेगा। फिर वह कहता है कि यह पाजी मधुआ न जाने उसके जीवन में कैसे आ गया। इसके आने से उसका जीवन ही बदल गया। कहाँ वह शराब पीने की सोच रहा था और कहाँ वह फिर से घरबारी बनने की सोच रहा है।

भावार्थ : भाव यह है कि शराबी मन ही मन मधुआ को लेकर दुविधा में था।

विशेष: क.) यहाँ शराबी का मानसिक द्वंद्व उजागर होता है।

ख.) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

ग.) शब्द चयन उपयुक्त व अवसरानुकूल है।

3.बैठे-बैठाये यह हत्या कहाँ से लगी। अब तो शराब न पीने की मुझे भी सौगंध लेनी पड़ी है।

प्रसंग: प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित मधुआ कहानी में से लिया गया है। जब बालक मधुआ ने शराबी को कहा कि वह ठाकुर की नौकरी नहीं करेगा किन्तु सुख-दुःख में हर हाल में तुम्हारे साथ रह लेगा तो शराबी ने उसकी आँखों में दृढ़ निश्चय देखा। यह सुनकर शराबी मन ही मन में ये पंक्तियाँ कह रहा है।

व्याख्या : मधुआ का कुँवर साहब के नौकरी न करने का दृढ़ निश्चय देखकर शराबी अपने आप से कहता है कि अब यह मधुआ मेरे साथ ही रहेगा। यह तो बैठे बिठाए मेरे सिर मुसीबत आ गयी। क्योंकि यदि मैं दिन भर शराब पीता रहूँगा और इसका लालन-पालन न कर सका तो यह बैठे बिठाए किसी की हत्या करने जैसा पाप मुझे लगेगा। क्योंकि किसी अबोध व अनाथ बालक की परवरिश करना बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी होती है। अत: बालक के दृढ़ निश्चय को देखते हुए उसे भी शराब न पीने की कसम लेनी पड़ी।

भावार्थ:भाव यह है कि शराबी ने अनाथ, दुःखी व कुँवर साहब के व्यवहार से पीड़ित व शोषित बालक की परवरिश करना शराब पीने की अपेक्षा श्रेयस्कर

समझा।

विशेष: क.) यहाँ किसी अनाथ, असहाय व दु:खी बालक की सहायता न करना किसी की हत्या करने से लगने वाले पाप के समान बताया गया है।

ख.) लेखक का गंभीर चिंतन द्रष्टव्य है।

ग.) शब्द चयन, उचित एवं पात्रानुकूल हैं।

घ.) भाषा, सरल, स्पष्ट एवं भावानुकूल है।

==========

तैयारकर्ता व प्रस्तुतकर्ता

डॉ.सुनील बहल

स्टेट रिसोर्स पर्सन (हिंदी और पंजाबी)

==========

CONFIDENTIAL